REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

भारतीय ट्रायबल पार्टी का उद्भव

पुष्पक मीणा
शोधार्थी,राजनीति विज्ञान विभाग,
मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय उदयपुर .

प्रस्तावना :

आज से 4 वर्ष पूर्व जब यह कारवा शुरू हुआ तब शायद यह अंदेशा भी नहीं था की यह विधानसभा चुनावों में इतना प्रभावी असर छोड़ जायेगी आज हर तरफ भारतीय ट्रायबल पार्टी की चर्चा चारों ओर है लेकिन हमे अतीत में भी जाना होगा जिससे यह पता चल सके की भारतीय ट्रायबल पार्टी आयी कैसे?

राजस्थान विधानसभा चुनाव (2018) या सत्ता का सेमीफाइनल कहा जाने वाले चुनाव में राजस्थान के दक्षिणी छोर में बसे डूँगरपुर जिले में विशेष आश्चर्य एवं हर तरफ चर्चा है की भारतीय ट्रायबल पार्टी सागवाड़ा एवं चौरासी विधानसभा चुनाव में जीती कैसे इस ऐतिहासिक एवं आश्चर्य चकित करने वाली पार्टी का अध्ययन अति आवश्यक है। जिसे हम विस्तार से अध्ययन करेंगे। वर्तमान में बी.टी.पी. की छात्र विंग मजबुत है। यह एक कार्डर बेस पार्टी है।

भुमिका :

भारतीय ट्राइबल पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष श्री महेश भाई वसावा एवं छोटू भाई वसावा है। और उनके पिता जी छोटू भाई अमरसंग वसावा जो कि 7वीं बार अपने क्षैत्र से विधायक का चुनाव जीते है। उनके नेतृत्व में पांच–छः तहसीलें के आदीवासियों सामाजिक, राजनैतिक, एवं आर्थिक क्रांति की है।

श्री महेश भाई वसावा का (रा. अध्यक्ष) का मिशन, आदीवासियों को एक मजबुत राजनैतिक विचारधारा देना है। जिससे आदिवासी दूसरो पर निर्भर न रहते हुए एक मजबूत निर्णायक बने।

भारतीय ट्राइबल पार्टी का मूल उद्देश्य सभी को साथ लेकर आदिवासी समाज में छिपी हुई प्रतिभाओं को योग्य स्थान देना है। सबको अपनी क्षमता के अनुसार कार्य सौपना और राजनैतिक आवाज को बुलंद करना है।

आदीवासियों को अपने संवैधानिक अधिकारों की रक्षा करने के लिए ऐसा सामाजिक और राजनैतिक समूह निर्माण करना है। जिसकी राष्ट्र ओर समाज के हित में स्पष्ट नीति हो। पूंजीपति एवं बाजारवाद के दलाल न हो। सामाजिक, शारीरिक, आर्थिक, शैक्षिक विकास को ही विकास का असली माप–दंड़ माने।

जनजागरण में मुख्य मुद्दे

- पांचवी अनुसूची, पैसा कानून, वन अधिकार कानून, जल, जंगल, जमीन की रक्षा करना
- सुप्रीम कोर्ट के आदिवासी के हित में दिये फैसलों को बताना
- आज तक ना कांग्रेस भाजपाने केन्द्र स्तर पर आदिवासियों को महत्वपूर्ण पदों पर जिम्मेदारी नहीं दी
- ना राज्यपाल, ना राष्ट्रपति, ना प्रधानमंत्री ना ही केन्द्रीय मंत्री मण्डल में स्थान हमेशा से ही उपेक्षा की।

भारतीय ट्रायबल पार्टी का उद्भव

आज से ठीक चार वर्ष पूर्व 'आदिवासीपरिवार' के नाम से समाज में एक एवं ''चिंतन शिविर'' शुरू हुआ जिसका उद्देश्य सर्वप्रथम ''आदिवासी विचारधारा'' हो एवं एक अलग पहचान हो। अपनी विलुप्त होती उदारीकरण में संस्कृति को पुनः लौटाना। तथा समाज में नव चेतना का संचार करना। अपने संवैधानिक मूल्यों पांचवी अनूसुची, पेसा कानून, आदिवासी अलग धर्म, जनगणना में पुनः शामिल कराना, अपने पूर्वजों की सरकारो द्वारा अनदेखा करने का रोष, राजीव गांधी जनजातीय विश्वविद्यालय को फुटबाल की तरह इस्तेमाल करना अर्थात आदिवासी समाज के प्रति सरकार की हर नीति पर अनदेखी जिससे शेष व्यापक हुआ। आज तक जो अदालतों के द्वारा आदिवासी के पक्ष में फैसला दिया उसका व्यापक प्रचार–प्रसार किया गया। कहा गया की आदिवासी इस देश का मूल मालिक है। तथा पूर्व में कांग्रेस सरकार द्वारा आदीवासियों को TSP के आरक्षण में अनदेखी मात्र 45% दिया जाना तथा SC को 5% और अन्य को 50% और वंसुधरा सरकार द्वारा इससे आगे चलकर TSP में अन्य को अपना आरक्षण निर्धारित करना एवं TSP-ST का भी 45% में ही सिमित करना जिससे अत्यधिक रोष उत्पन्न हुआ। जिससे हजारो युवा बेरोजगार हुए एक और घटना घटी बिरंसा मुंडा की जंयति मनाये जाने पर सरकार द्वारा पुलिसिया कार्यवाही से अध्यधिक रोष उत्पन्न हुआ धीरे धीरे यह चिंतन शिविर का कारवा इन बिन्दुओं पर आगे बढता गया।

चिंतन शिविर में भाजपा एवं कांग्रेस के भी नेताओं को बुलाया गया लेकिन उन्होने दूरी बनाली। उनमे भाजपा के एक विधायक शामिल हुए देवेन्द्र कटारा जो अनेक चिंतनशिविर में शामिल हुए। लेकिन धीरे–धीरे ये कारवा एक मजबुत तरीके से उभरने लगा। और मिडिया ने इसमे कोई दिलचस्पी नहीं निभाई।

जागरूकता का कारवां में प्रमुख रूप से 'भवरदादा (परमार) ने जन जागरण में अति महत्वपूर्ण भुमिका निभाई साथ में साथ मिला कांतिभाई आदिवासी का इन दोनो बखुबी अपनी भूमिका निभाई जिसके परिणाम यह हुए की सरकारी कर्मचारी भी जुडने लगे उन्हे विश्वास में लिया गया की आपके हक और अधिकारों की रक्षा की जायेगी। तथा भविष्य के भील प्रदेश के निर्माण में सहयोग प्रदान करे। जिसके परिणाम यह हुआ की सरपंच, जन प्रतिनिधि प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से चंदा देने लगे। जिससे समय के साथ पहली चुनौती यह आयी की इन्हे एक–जुट कैसे रखा जाए तो सर्वप्रथम ''भील ऑटो नॉमस कौंसिल'' बनायी जिसे शोर्ट में (AC) कहा गया। इनमे सदस्य संख्या निर्धारित नहीं है। इसमे उन लोगों को लिया गया जो कि संवैधानिक अधिकारों एवं अपनी बातों को बेबाकी के साथ रख सके।

अर्थात अपने क्षैत्रों में ग्राम सभाओं को मजबुत किया गया। धीरे–धीरे इनके द्वारा छात्रसंघ चुनावों में ''भील प्रदेश विद्यार्थी मोर्चा'' का गठन एवं ''भील प्रदेश मुक्ति मोर्चा'' का गठन किया गया। जिसका सर्वप्रथम प्रयोगशाला के रूप में देखा गया। बाद में परिणाम आश्चर्य जनक आये जिले की सभी कॉलेजों में भील प्रदेश विद्यार्थी मोर्चा सभी सीटों पर विजेता रहा। जिससे हौसला बढने लगा और उन्हे उम्मीद जगी आने वाले समय में आदिवासी भाजपा–कांग्रेस में नहीं बटेगा। और अपनी एक अलग पहचान बनाऐगा।

जिससे गुजरात चुनावों पर पूर्ण नजर रही तब वहा BTP का कांग्रेस के साथ गठबंधन था। लेकिन गुजरात में सिर्फ 2 सीटे जीती तो राजस्थान में गठंबंधन नहीं हुआ। एक संदेश यह गया भारतीय ट्राइबल पार्टी को लेकर की पहली राजस्थान में राजनैतिक पार्टी है जिसका अध्यक्ष आदिवासी है।

इन सबको एक जुट होने का मौका 2 अप्रेल की St /sc कानून के विरोध के रूप में ST/Sc/ और मुस्लिम को एक होने का मौका मिला जिसमे, भाजपा–कांग्रेस के लोग मौन रहे। जिससे उन्हे समाज का गद्दार कहने में असानी हुई। और भाजपा के एक विधायक भी आदिवासी पार्टी के आने के बाद कबिला संस्कृति को अपना रहे है। इसलिए में अलग होता हूँ के बयान का कोई फर्क ना पड़ा ना वो भाजपा के रह पाये जा ही आदिवासी परिवार वे आज के निर्दलीय चुनाव भी लडलिए लेकिन ये हार गये।

BTP के लक्ष्य

1. BTP भारत के आदिवासीयों को राजनैतिक आजादी दिलाने के लिए दृढ संकल्पित है।

2. भारतीय ट्राइबल पार्टी बराबरी के सिद्धान्त पर खडी की गई है जिसमे भेदभाव, जातिवाद जैसी संकिर्णताओं को बाहर कर दिया है इसलिए BTP में एक बार MP. MLA बन जाने पर दूसरी बार मौका नहीं मिलेगा।
3. भारतीय ट्राइबल पार्टी पाँचवी अनुसूची को 100 प्रतिशत लागु करवाने के लिए दृढ संकल्पित है।
4. B.T.P. शिडयुल एरिया में उच्च पदो पर 6.5 प्रतिशत अलग से आरक्षण की मांग करेगी जिससे उच्च पदो पर शिडयुल एरिया के लोगो की भागीदारी सुनिश्चित हो सके।
5. B.T. P. का राज आने के बाद किसी भी कर्मचारी को चाहे वो किसी भी वर्ग का क्यों ना हो उसके मौलिक अधिकारों की रक्षा करेंगी।

B.T. P. आने का कारण

आजादी के 70 वर्षों तक बारी–बारी से जमीदारों, सामन्तों के वर्चस्व को बनाए रखने वाली कांग्रेस–बीजेपी ने राज किया लेकिन पार्टीयों में अब तक लोकतंत्र स्थापित नहीं हो सका फलस्वरूप आदीवासियों को संवैधानिक अधिकार संविधान से निकालकर धरातल पर लागू नहीं किये। जिससे देश भरके आदिवासी ठंगे से महसूसू करने लगे। यही कारण है की देश के आदीवासियों की राजनैतिक आजादी हासिल कर आर्थिक एवं सांस्कृतिक आजादी हासिल करने के लिए स्वतंत्र पार्टी भारतीय ट्राइबल पार्टी आई है। कांग्रेस व भाजपा ने जिन मुद्दो को आज तक छुआ नही उन्ही को पूरा करने के लिए मैदान में आयी है।

कांग्रेस एवं भाजपा से नाराज होने के कारण

- कांग्रेस व भाजपा उच्च वर्गो की पार्टी होने के कारण आदिवासी नेताओं को गुलाम बनाकर रखा गया है यही कारण है की आदिवासी नेताओं को पार्टी के महत्वपूर्ण पदो पर कभी नहीं आने दिया गया।
- जबकी कांग्रेस–भाजपा जातिवाद, वंशवाद और भेदभाव की नीव पर खड़ी होने के कारण बार–बार एक ही व्यक्ति को टिकट दिया जाता है। C.M. अथवा P.M. भी एक दो राजघराने वाले ही चुना जाता है ऐसा करना अलोकतांत्रिक है।
- वर्तमान कांग्रेस व भाजपा का संरक्षण पाकर शोषक जातियों ने अपने गुलाम आदिवासी के नाम करोड़ों की जमीने खरीद रखी है जो कि बेनामी संम्पतियों की श्रेणी में आती है।
- कांग्रेस व भाजपा आदीवासियों के विशेषाधिकारों को सुनिश्चित करने वाली पांचवी अनुसूची को समाप्त करना चाहते है। इसके लिए वे कई प्रकार की संस्थाएं भेजकर आदिवासी संस्कृति में बदलाव करने में लगे हुए है क्योकि संस्कृति के कारण ही पाँचवी अनुसूची जिंदा रहेगी।

भारतीय ट्राइबल पार्टी के मुख्य नारे चुनावों में।

भारतीय ट्राईबल पार्टी का अपना एक संविधान है।

- ''अबुआ दिशुम अबुआ राज अर्थात आदिवासी क्षैत्रों में आदीवासियों का राज।''
- ''BTP आयी रे नबली क्रांति लायी रे –नवली अर्थात–नयी क्रांति।''
- ना हाथ ना फुल अबकी बार टेम्पों।
- टम्पों को जीताओं जोरो से, भील प्रदेश बचाओं चोरों से।
- एक तीर एक कमान आदिवासी एक समान।
- जय जोहार का नारा है, भारत देश हमारा है।

पार्टी का उद्देश्य (B.T.P.)

- भारत ने सभी धर्म और जाति के लोगों के मूलभूत अधिकार एवं संवैधानिक अधिकारों की रक्षा करना।
- आदिवासी, दलित, पिछडा, एवं धार्मिक लघुमती के स्वास्थ्य शिक्षा, रोजगार, आवास, जमीन, जंगल, और पानी की समस्याओं के समाधान के लिए आवाज उठाना।
- दबे कुचे लोगो के लिए शासन एवं प्रशासन को आवेदन करना।

- आदीवासियों के जल–जंगल–जमीन–खदान–सिंचाई के प्रश्नों का समाधान निकालना।
- सामाजिक एवं राजनैतिक जाग्रति के लिए शिविर एवं सम्मेलन करना।
- ग्राम से लेकर संसद तक आदिवासी, दलित, पिछड़ा एवं धार्मिक लघुमती के प्रतिनिधित्व के लिए काबिलता तलासना
- राष्ट्र की अंखडितता एवं एकता के लिए हर संभव प्रयास करना।
- जिससे विधानसभा के चुनावों में 2 सीटे जीती। इसके पश्चात भी आज से ही लोकसभा की तैयारी शुरू कर दी गई है।

बासिया गाँव में सतं गोविन्द गुरू महाराज का 161वां जन्म दिवस 20 दिसम्बर को मनाया गया तथा चिंतन शिविर पुनः चालू कर दिया गया। जो कि अभी से लोकसभा की तैयारी है। आने वाले समय में B.T.P. लोकसभा और पंचायतीराज चुनावों में पूरी ताकत के साथ चुनाव मैदान में उतरेगी।

उनका कहना है की सरकार में बैठे हुए आदिवासी संसद विधानसभाओं में अपने समाज के नेताओं, शहीदों का सम्मान न होने पर सरकार में से इस्तीफा दे देना चाहिए।

जो सरकार भील प्रदेश की रचना करने मे रोक–टोक या शासन–प्रशासन के दबाव पर भी आदिवासी समाज सत्य–अंहिसा के मार्ग पर जगह–जगह आंदोलन करेंगेऐसी सम्भावना है।

भील प्रदेश में समाविष्ठ संभावित जिले निम्न है।

राज्य जिले

गुजरात – दाहोद, साबरकांठा, पंचमहल, महिसागर बलसाड,डांग, तांपी, नर्मदा, अरवल्ली सुरत (ग्राम्य),वडोदरा (ग्राम्य), छोटा उदयपुर

राजस्थान – डुंगरपुर, बांसवाड़ा, उदयपुर, सिरोही, चित्तौड़, प्रतापगढ़

मध्यप्रदेश – जाबुंआ, रतलाम, मंडला, धार, खांडवा, खरगोन,सेलाना, वेतुला, सिओनी, भालागत मोरेन, मंदसोर,निमच

महाराष्ट्र– पालो, नासिक, धूले, अहमदनगर, पुना नांदेड़,अमरावती, पाबंत माला, गढ चिरोली चंद्रपुर

मानचित्र पुराना भील राज्य जो कि अंग्रेजों के समय से था। जिन निम्न आदिवासियों को आदर्श माना और प्रेरणा स्त्रोत बने वे निम्न हैः–

राजस्थान विधानसभी चुनाव में बी.टी.पी. का प्रदर्शन (प्रतिशत में)

पार्टी का नाम	डूँगरपुर / बांसवाड़ा	उदयपुर
बी.टी.पी	12.49	5.72
कांग्रेस	25.81	39.77
बी.जे.पी.	32.91	45.56
जनता सेना	–	0.54
अन्य	20.79	8.42

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारतीय ट्राइबल पार्टी का घोषणा पत्र, 2018 विधानसभा चुनाव।
2. भील प्रदेश (भीलीस्थान राज्य) डॉ. जयंतीलाल बामनिया।
3. कांतिभाई आदिवासीसे व्यक्तिगत साक्षात्कार किया।
4. भवरदादा (परमार से प्रत्यक्ष मिलाना या साक्षात्कार किया)।
5. डॉ. वेलाराम गोघरा से व्यक्तिगत साक्षात्कार किया।
6. ईश्वरलाल कटारा–पूर्व महासचिव G.G.T.U.से व्यक्तिगत साक्षात्कार किया।
7. जनता द्वारा भी पूछा गया।
8. नव निर्वाचित विधायक–राजकुमार रोत्र (B.T.P.)से साक्षात्कार किया।
9. सुप्रीम कोर्ट के फैसले और आदिवासी अधिकार – ग्लैडसन डुंगडुंग

10. आदिवासियों के संविधानिक अधिकार, भारत वाद्यमरे।
11. राजस्थान पत्रिका
12. दैनिक नवज्योति

LBP PUBLICATION